गुरू नानक देव जी महाराज के 550वें प्रकाशोत्सव की लख–लख बधाइयाँ तथा हार्दिक शुभकामनाएँ

गुरू नानक देव जी महाराज का संक्षिप्त जीवन–परिचय

गुरू नानक देव जी एक महान सन्त और सुधारक थे जिन्हें सिख–संगत एवं उनके अनुयायी अपना गुरू और परमात्मा का अवतार मानते हैं। आप सिख सम्प्रदाय के मूल प्रर्वतक तथा प्रथम गुरू थे। 'सिख' शब्द शिष्य का अपभ्रंश रूप है। गुरू नानक देव जी के शिष्य कालान्तर में 'सिख' नाम से प्रसिद्ध हुए। यह शब्द धार्मिक विचारधारा का वाहक बन गया।

आपका धर्म या पन्थ निरा सैद्वान्तिक या आर्दशवादी मत नहीं है। इसे शुद्ध व्यावहारिक मत कहना उपयुक्त होगा। इस पन्थ में चरित्र–निर्माण तथा चारित्रिक–विकास की ओर विशेष घ्यान दिया गया है। आपने वर्ण–व्यवस्था की संकुचित परिधि से ऊपर उठकर मानव–समाज को ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का उपदेश दिया। आपके अनुसार प्राणी वही है जिसमें ब्राह्मण जैसी साधना, सत्य–प्रियता और चरित्र–बल हो, क्षत्रिय जैसी आत्म–रक्षा की भावना हो, वैश्य जैसी व्यावहारिक–बुद्धि हो और शूद्र जैसी सेवा–भावना हो। इस प्रकार आपने ईर्ष्या–द्वेष में जलती हुई जनता को प्रेम–सन्देश दिया।

आपका इस पृथ्वी पर आगमन 20 अक्टूबर, 1469 ई. (अथवा कार्तिक सुदी की पूर्णमासी, विक्रम संवत 1526) को तलवंडी नामक ग्राम (वर्तमान नाम – ननकाणा साहिब, पाकिस्तान) में पिता मेहता कालू और माता तृप्ता के यहाँ बेदी वंश में हुआ। तदनुसार, श्री गुरु नानक जी का प्रकाशोत्सव प्रति वर्ष कार्तिक सुदी (शुक्ल पक्ष) माह की पूर्णमासी को श्रद्धापूर्वक तथा उत्साह से मनाया जाता है।

पिता ने आपको धनोपार्जन के कुछ व्यवसायों मे संलग्न करने के प्रयत्न किए, किन्तु उनका कोई प्रयत्न सफल नहीं हुआ। निराश होकर आपको सुल्तानपुर लोधी भेजा गया जहाँ आप नवाब के 'मोदीखाना' में लगभग 13 वर्ष कार्य करते रहे। 1499 ई. में जब एक दिन आप 'वेई' नदी में स्नान करने गये तब आपको भगवान के दर्शन हुए और भगवान ने आपको 'गुरूता' के प्रकाश का दान दिया। इस धटना के पश्चात् आप भगवान के निर्दिष्ट उद्देश्य 'नाम–सन्देश' को तथा धर्म को प्रतिष्ठित करने के प्रयोजन से 22 वर्ष देश–देशान्तर में भ्रमण करते रहे। आपने पांच लम्बी यात्राएँ कीं। भारत के तीर्थ

स्थानों और मक्का मदीना तक गए और सब जगहों पर 'नाम–सन्देश' द्वारा भटके हुए जन–मानस को प्रभु–मार्ग दर्शाया। यात्राओं के पश्चात आप 18 वर्ष करतारपुर में रहे और आपने अपने जीवन को धार्मिक उद्देश्यों के अनुसार साँचे में ढालकर लोगों को उस मार्ग का साक्षात्कार करवाया जिस मार्ग का अनुसरण करके कोई भी मनुष्य एक साथ राजा और योगी दोनों ही हो सकता है। करतारपुर में आप दिनांक 7 सितम्बर, 1539 ई. (अर्थात असू बदी, विक्रम संवत् 1596) को 70 वर्ष की आयु में 'ज्योति–जोत' समा गए। आप के दो पुत्र बाबा श्रीचन्द और बाबा लक्ष्मीचन्द थे, किन्तु आपने अपना उत्तराधिकारी अपने अनन्य सेवक लहना जी को घोषित किया और उनका नाम गुरू अंगद देव रखा।

आदि गुरू ग्रन्थ साहिब

आदि गुरू ग्रन्थ में श्री गुरू नानक जी के 976 पद और श्लोक – 19 रागों में संग्रहीत हैं। इसमें जपुजी साहिब, आसा–दी–वार, दखणी ओअंकार, सिंध–गोष्टि, बारह–माहा (तुखारी), तीनों वारें (माझ, आसा और मलार), पटी, थिति, सोहल आदि रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय है। आदि गुरू ग्रन्थ अनेकानेक अनमोल रत्नों के अमूल्य भंडार हैं। इसमें समाहित ''गुरुवाणी'' विशुद्ध अन्तःकरण द्वारा अभिव्यक्त हुआ ईश्वरीय व भक्तमय ज्ञान है जो परमेश्वर की स्वयं की वाणी है। ''गुरुवाणी'' मनुष्य मात्र के लिए युग–वाणी है। आदि गुरू ग्रन्थ साहिब में 36 महापुरुषों की वाणियां संकलित हैं : यथा प्रथम पांच गुरु साहिबान – गुरु नानक जी, गुरु अंगद देव जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास जी, गुरु अर्जन देव जी – तथा नौवें गुरु तेगबहादुर जी व भक्त कबीर, भक्त त्रिलोचन, भक्त रविदास, भक्त नामदेव, स्वामी रामानन्द, भक्त सूरदास आदि।

आदि गुरु ग्रन्थ साहिब के रचयिता तथा संकलनकर्त्ता पाचवें गुरु अर्जन देव साहिब है। ''गुरुवाणी'' को 'धुर की वाणी' (इलाही–वाणी) का नाम दिया गया है। अपने 'ज्योति–जोत' होने के पूर्व, दसम गुरु श्री गोबिन्द सिंह जी ने आदि गुरु ग्रंन्थ साहिब को ग्यारहवें गुरू के रुप में स्थापित करते हुए सिख–संगत एवं अनुयाइयों को हुक्मनामा जारी करते हुए कहा कि अब गुरु ग्रंन्थ साहिब को ही प्रत्यक्ष एवं हाज़रां–हजूर गुरू माने तथा गुरुवाणी में बताये गये मार्ग का अनुसरण कर अपने जीवन को सफल बनायें। उनका फरमान है:

''सब सिक्खन हो हुक्म है,
गुरू मानियो ग्रन्थ''